# कैवल्यपाद

*संगति — कैवल्यपाद में उपयोगी-चित्त के निर्णय के लिए पाँच प्रकार की सिद्धियाँ और उन से उत्पन्न पाँच सिद्ध चित्तों का वर्णन है ।*

**जन्मौषधिमन्त्रतपःसमाधिजाःसिद्धयः ॥१॥**

**जन्म** — जन्म,
**औषधि** — औषधि,
**मन्त्र** — मन्त्र,
**तपः** — तप (और)
**समाधिजाः** — समाधि, (इन पाँचों) से उत्पन्न (होने वाली)
**सिद्धयः** — सिद्धियाँ अर्थात् शरीर और इन्द्रियों आदि में विलक्षण शक्तियों का उदय होना (हैं) ।

*संगति — शरीर और इन्द्रियों आदि में विलक्षण शक्ति का आ जाना अर्थात् एक आन्तरिक स्थिति से दूसरी स्थिति में बदलना किस प्रकार होता है ?*

**जात्यन्तरपरिणामः प्रकृत्यापूरात् ॥२॥**

**जाति-अन्तर** — (शरीर और इन्द्रियों का औषधि, मन्त्र, तप और समाधि के अनुष्ठान से) एक जाति से दूसरी जाति (में)
**परिणामः** — बदल जाना अर्थात् सिद्धियों का आ जाना
**प्रकृति** — प्रकृतियों (के)
**आपूरात्** — भरने अर्थात् पूर्ण होने से (होता है) ।





*संगति — निमित्त कारण अर्थात् औषधि, मन्त्र आदि प्रकृतियों की पूर्णता कैसे कर देते हैं ?*

**निमित्तमप्रयोजकं प्रकृतीनां वरणभेदस्तु ततः क्षेत्रिकवत् ॥३॥**

**निमित्तम्** — निमित्त कारण अर्थात् औषधि, मन्त्र आदि
**प्रकृतीनाम्** — प्रकृतियों के
**अप्रयोजकम्** — प्रेरक नहीं होते,
**तु** — किंतु
**ततः** — उस (निमित्त कारण से)
**क्षेत्रिकवत्** — किसान की भाँति (पानी भरने के लिए खेत में मेढ़ जैसी)
**वरणम्** — रुकावट (को)
**भेदः** — तोड़ने (से प्रकृतियों की पूर्ति अपने आप हो जाती है) ।

*संगति — इन चित्तों का निर्माण किस से होता है ?*

**निर्माणचित्तान्यस्मितामात्रात् ॥४॥**

**निर्माण** — (जन्म, औषधि, तप, मन्त्र और समाधि के अनुष्ठान से) निर्मित (किए गए)
**चित्तानि** — चित्त
**अस्मिता** — अस्मिता अर्थात् चित्त के अहं-भाव (के कारण)
**मात्रात्** — मात्र से (होते हैं) ।

*संगति — एक चित्त किस प्रकार अनेक चित्तों को नाना प्रकार की प्रवृत्तियों में नियुक्त कर सकता है ?*

**प्रवृत्तिभेदे प्रयोजकं चित्तमेकमनेकेषाम् ॥५॥**

**प्रवृत्ति** — (निर्मित किए गए चित्तों के) कार्य
**भेदे** — भिन्न (होने पर भी)
**एकम्** — एक (अधिष्ठाता)
**चित्तम्** — चित्त
**अनेकेषाम्** — अनेकों (चित्तों का)
**प्रयोजकम्** — प्रेरक (होता है)।

*संगति — अब इन पाँच प्रकार की सिद्धियों से उत्पन्न चित्तों में से समाधि-जन्य चित्त की क्या विलक्षणता है ?*

**तत्र ध्यानजमनाशयम् ॥६॥**

**तत्र** — उन (पाँच प्रकार के निर्मित सिद्ध चित्तों में से)
**ध्यानजम्** — ध्यान से उत्पन्न (होने वाला चित्त)
**अनाशयम्** — वासनाओं से रहित (होता है)।

*संगति — समाधि-जन्य चित्त वासना-रहित कैसे हो सकता है ?*

**कर्माशुक्लाकृष्णं योगिनस्त्रिविधमितरेषाम् ॥७॥**

**योगिनः** — योगी का
**कर्म** — कर्म
**अशुक्ल** — न पुण्य (होता है और)
**अकृष्णम्** — न पाप, अर्थात् निष्काम होता है (और)
**इतरेषाम्** — दूसरों का (पाप, पाप-पुण्य मिश्रित और पुण्य, इन)
**त्रिविधम्** — तीन प्रकार (का होता है)।





*संगति — साधारण चित्त द्वारा किए गए तीन प्रकार के कर्मों का क्या फल है ?*

**ततस्तद्विपाकानुगुणानामेवाभिव्यक्तिर्वासनानाम् ॥८॥**

**ततः** — उन (तीन प्रकार के कर्मों अर्थात् शुक्ल, कृष्ण और शुक्लकृष्ण कर्मों से)
**तत्** — उन्हीं (के)
**विपाक** — फल (के)
**अनुगुणानाम्** — अनुकूल
**एव** — ही
**वासनानाम्** — वासनाओं की
**अभिव्यक्तिः** — अभिव्यक्ति (होती है)।

*संगति — अनेक जन्मों की वासनाएँ जन्म-जन्मान्तर के बाद भी वर्तमान जन्म की वासनाओं के रूप में कैसे प्रकट हो जाती हैं ?*

**जातिदेशकालव्यवहितानामप्यानन्तर्यं स्मृतिसंस्कारयोरेकरूपत्वात् ॥९॥**

**जाति** — (जन्म-मरण चक्र में) जन्म,
**देश** — स्थान (और)
**काल** — समय (के)
**व्यवहितानाम्** — व्यवधान अर्थात् अन्तराल (रहने पर)
**अपि** — भी (वर्तमान जाति के अनुसार वासना के संस्कारों के प्रकट होने में)
**आनन्तर्यम्** — रुकावट नहीं होती, (क्योंकि)
**स्मृति** — स्मृति

**संस्कारयोः** — संस्कारों के
**एकरूपत्वात्** — एक रूप (हो जाती है)।

*संगति — जब वासनाओं के अनुसार जन्म और कर्मों के अनुसार वासना हो, तो सब से पहले जन्म देने वाली वासना कहाँ से आयी ?*

**तासामनादित्वं चाशिषो नित्यत्वात् ॥१०॥**

**तासाम्** — उन (वासनाओं) का
**अनादित्वं** — अनादि होना
**च** — भी (सिद्ध है, क्योंकि प्राणी में)
**आशिषः** — अपने बने रहने की इच्छा
**नित्यत्वात्** — नित्य (है)।

*संगति — जब वासनाएँ अनादि हैं तो उनका अभाव कैसे होगा ?*

**हेतुफलाश्रयालम्बनैः संगृहीतत्वादेषामभावे तदभावः ॥११॥**

**हेतु** — अविद्या;
**फल** — जाति, आयु और भोग;
**आश्रय** — चित्त (और)
**आलम्बनैः** — इन्द्रियों के विषयों; (इन चारों से वासनाओं का)
**संगृहीतत्वात्** — संग्रह (होता है, इसलिए)
**एषाम्** — इन अर्थात् हेतु, फल, आश्रय और आलम्बन के
**अभावे** — अभाव में
**तत्** — उन (वासनाओं) का (भी)
**अभावः** — अभाव (हो जाता है)।





*संगति — यदि वासनाएं अनादि हैं तो वासनाओं और उन के हेतु का सर्वथा अभाव कैसे हो सकता है ?*

**अतीतानागतं स्वरूपतोऽस्त्यध्वभेदाद्धर्माणाम् ॥१२॥**

**अतीत** — (उक्त अभाव में भी वासनाएँ और उन के हेतु) भूत (और)
**अनागतम्** — भविष्यत् अर्थात् अव्यक्त
**स्वरूपतः** — स्वरूप से (विद्यमान)
**अस्ति** — रहते हैं अर्थात् उन का सर्वथा नाश नहीं होता, (क्योंकि)
**धर्माणाम्** — धर्मों अर्थात् वासना और हेतु का
**अध्व-भेदात्** — काल से भेद (होता है)।

*संगति — धर्मों का क्या स्वरूप है ?*

**ते व्यक्तसूक्ष्मा गुणात्मानः ॥१३॥**

**ते** — वे (समस्त धर्म)
**व्यक्त** — प्रकट (और)
**सूक्ष्माः** — सूक्ष्म (स्थिति में सदैव सत्त्व, रजस् और तमस्)
**गुणात्मानः** — गुण स्वरूप (ही रहते हैं)।

*संगति — जब तीनों गुण ही सम्पूर्ण पदार्थों के कारण हैं तो वस्तुओं का रूप अलग अलग कैसे हो सकता है ?*

**परिणामैकत्वाद्वस्तुतत्त्वम् ॥१४॥**

**परिणाम** — (तीनों गुणों के) परिणाम (की)
**एकत्वात्** — एकता होने से
**वस्तु** — वस्तु (की)

**तत्त्वम्** — एकता (होती है) ।

*संगति — क्या चित्त अपनी वासना के कारण ही दृश्य रूप में प्रतीत होने लग जाता है और चित्त से भिन्न कोई वस्तु नहीं है ?*

**वस्तुसाम्ये चित्तभेदात्तयोर्विभक्तः पन्थाः ॥१५॥**

**वस्तु** — वस्तु (के)
**साम्ये** — एक होने पर (भी साधारण)
**चित्त** — चित्तों (के)
**भेदात्** — भेद से
**तयोः** — उन दोनों अर्थात् चित्त और उसके द्वारा देखी जाने वाली वस्तु के
**विभक्तः** — अलग-अलग
**पन्थाः** — मार्ग (हैं) ।

*संगति — जब साधारण चित्त अपनी वासनाओं के अनुसार वस्तुएँ भिन्न भिन्न प्रतीत करता है, तो क्या वस्तु की सत्ता चित्त से स्वतन्त्र है?*

**न चैकचित्ततन्त्रं वस्तु तदप्रमाणकं तदा किं स्यात् ॥१६॥**

**च** — और (ग्राह्य)
**वस्तु** — वस्तु (किसी)
**एक** — एक
**चित्त** — चित्त (के)
**तन्त्रम्** — अधीन
**न** — नहीं (है, क्योंकि)
**तत्** — वह (वस्तु)





**अप्रमाणकम्** — बिना प्रमाण के, अर्थात् जब वह चित्त का विषय न रहे,
**तदा** — उस (समय)
**किम्** — क्या
**स्यात्** — होगी ? (अर्थात् चित्त का विषय न रहने पर भी वस्तु की सत्ता रहती है ।)

*संगति — परन्तु वह वस्तु चित्त को सदा के लिए ज्ञात क्यों नहीं होती ?*

**तदुपरागापेक्षित्वाच्चित्तस्य वस्तु ज्ञाताज्ञातम् ॥१७॥**

**तत्** — उस
**वस्तु** — वस्तु (के विषय का चित्त में)
**उपराग** — प्रतिबिम्ब (पड़ने की)
**चित्तस्य** — चित्त (को)
**अपेक्षित्वात्** — अपेक्षा होती है, (इसलिए चित्त को वह वस्तु कभी)
**ज्ञात** — ज्ञात (और कभी)
**अज्ञातम्** — अज्ञात (होती है) ।

*संगति — इस प्रकार दृश्य वस्तुओं से चित्त की सत्ता भिन्न सिद्ध करके अब द्रष्टा अर्थात् आत्मा की चित्त से भिन्न सत्ता सिद्ध करते हैं ।*

**सदा ज्ञाताश्चित्तवृत्तयस्तत्प्रभोः पुरुषस्यापरिणामित्वात् ॥१८॥**

**चित्त** — (उस चित्त के स्वामी को अपने) चित्त (की)
**वृत्तयः** — वृत्तियाँ
**सदा** — सदा
**ज्ञाताः** — ज्ञात (रहती हैं, क्योंकि)

**तत्** — उस (चित्त का)
**प्रभोः** — स्वामी
**पुरुषस्य** — पुरुष
**अपरिणामित्वात्** — अपरिणामी अर्थात् परिवर्तन-रहित (है) ।

*संगति — तो क्या चित्त अपने आप को प्रकाशित नहीं कर सकता ?*

### न तत्स्वाभासं दृश्यत्वात् ॥१९॥

**तत्** — वह (चित्त)
**स्व** — अपने आप (को)
**आभासम्** — प्रकाशित
**न** — नहीं (कर सकता, क्योंकि वह चित्त)
**दृश्यत्वात्** — दृश्य (मात्र है) ।

*संगति — क्या चित्त अपना और विषय का ज्ञान एक साथ कर सकता है ?*

### एकसमये चोभयानवधारणम् ॥२०॥

**च** — और
**एक** — एक
**समये** — समय में
**उभय** — दोनों अर्थात् चित्त और उस के विषय का
**अनवधारणम्** — ज्ञान नहीं (हो सकता) ।

*संगति — क्या चित्त अपने आप को ज्ञात नहीं कर सकता ?*





### चित्तान्तरदृश्ये बुद्धिबुद्धेरतिप्रसङ्गः स्मृतिसंकरश्च ॥२१॥

**चित्त** — (यदि एक) चित्त (को)
**अन्तर** — दूसरे (चित्त का)
**दृश्ये** — दृश्य (माना जाए, तो)
**बुद्धिबुद्धेः** — चित्त के चित्त का
**अतिप्रसङ्गः** — अनवस्था दोष (होगा)
**च** — और
**स्मृति** — स्मृतियों (में भी)
**सङ्करः** — मिश्रण अर्थात् दोष (हो जाएगा) ।

*संगति — तब क्रियारहित और अपरिणामी पुरुष विषय को कैसे ग्रहण कर सकता है, क्योंकि विषय को ग्रहण करने में क्रिया और परिणाम दोनों होते हैं ?*

### चितेरप्रतिसंक्रमायास्तदाकारापत्तौ स्वबुद्धिसंवेदनम् ॥२२॥

**चितेः** — (यद्यपि) चिति अर्थात् चेतन-पुरुष
**अ-प्रति-संक्रमायाः** — क्रियारहित अर्थात् अपरिणामी (है, तो भी वह)
**तत्** — उस (स्वप्रतिबिम्बित चित्त के)
**आकार** — आकार (की)
**आपत्तौ** — प्राप्ति होने पर
**स्व** — अपने (विषयभूत)
**बुद्धि** — चित्त (का)
**संवेदनम्** — ज्ञान (करता है) ।

*संगति — चित्त क्यों पुरुष और दृश्य जैसा ज्ञात होता है ?*

**द्रष्टृदृश्योपरक्तं चित्तं सर्वार्थम् ॥२३॥**

**द्रष्टृ** — द्रष्टा (और)
**दृश्य** — दृश्य (से)
**उपरक्तम्** — रंगा हुआ
**चित्तम्** — चित्त
**सर्व** — सब
**अर्थम्** — अर्थों अर्थात् आकार (वाला होता है) ।

*संगति — परन्तु चित्त की वासनाएँ पुरुष की कैसे हो सकती हैं ?*

**तदसंख्येयवासनाभिश्चित्रमपि परार्थं संहत्यकारित्वात् ॥२४॥**

**तत्** — वह (चित्त)
**असंख्येय** — अनगिनत
**वासनाभिः** — वासनाओं से
**चित्रम्** — चित्रित (हुआ)
**अपि** — भी
**पर** — दूसरे (के)
**अर्थम्** — लिए (है, क्योंकि वह चित्त)
**संहत्य-कारित्वात्** — संहत्यकारी[२६] (है) ।

*संगति — अब आत्मा का वास्तविक स्वरूप कैसे जाना जा सकता है?*

[२६] **संहत्यकारी** — अनेक तत्वों के संयोग से बना पदार्थ स्वयं के लिए नहीं होता अपितु दूसरों के लिए कार्य में समर्थ होता है ।





**विशेषदर्शिन आत्मभावभावनाविनिवृत्तिः ॥२५॥**

**विशेष** — (विवेकख्याति द्वारा पुरुष और चित्त में) भेद (को)
**दर्शिनः** — प्रत्यक्ष कर लेने वाले (योगी की)
**आत्म-भाव** — आत्म भाव (की)
**भावना** — भावना (की)
**विनिवृत्तिः** — निवृत्ति (हो जाती है) ।

*संगति — विशेष-दर्शन के उदय होने पर विशेष-दर्शी का चित्त कैसा होता है ?*

**तदा विवेकनिम्नं कैवल्यप्राग्भारं चित्तम् ॥२६॥**

**तदा** — तब (विशेष-दर्शन के उदय होने पर विशेष-दर्शी का)
**चित्तम्** — चित्त
**विवेक** — विवेक (की ओर)
**निम्नम्** — झुका हो कर
**कैवल्य** — कैवल्य
**प्राग्भारम्** — अभिमुख (हो जाता है) ।

*संगति — विवेक-प्रवाही चित्त में भी बीच बीच में कभी कभी व्युत्थान की वृत्तियाँ क्यों उत्पन्न होती हैं ?*

**तच्छिद्रेषु प्रत्ययान्तराणि संस्कारेभ्यः ॥२७॥**

**तत्** — उस (विवेकज्ञान के)
**छिद्रेषु** — छिद्रों अर्थात् अन्तराल में
**प्रत्यय-अन्तराणि** — दूसरी (व्युत्थान की) वृत्तियाँ (पूर्व के व्युत्थान के)
**संस्कारेभ्यः** — संस्कारों से (होती हैं) ।

*संगति — उन व्युत्थान के संस्कारों के त्याग के क्या उपाय हैं ?*

**हानमेषां क्लेशवदुक्तम् ॥२८॥**

**एषाम्** — उन (व्युत्थान के संस्कारों की)
**हानम्** — निवृत्ति (भी)
**क्लेशवत्** — क्लेशों की भाँति (ही)
**उक्तम्** — कही (गई है) ।

*संगति — विवेकज्ञान प्राप्त होने के बाद क्या होता है ?*

**प्रसंख्यानेऽप्यकुसीदस्य सर्वथा विवेकख्यातेर्धर्ममेघः समाधिः ॥२९॥**

**प्रसंख्याने** — (जो योगी) विवेकज्ञान में
**अपि** — भी
**अकुसीदस्य** — विरक्त है, (उस को)
**सर्वथा** — निरन्तर
**विवेकख्यातेः** — विवेकख्याति के उदय होने से
**धर्म-मेघः** — धर्ममेघ
**समाधिः** — समाधि (प्राप्त होती है) ।

*संगति — धर्ममेघ समाधि का क्या फल है ?*

**ततः क्लेशकर्मनिवृत्तिः ॥३०॥**

**ततः** — उस (धर्ममेघ समाधि से)
**क्लेश** — क्लेश
**कर्म** — कर्मों (की)
**निवृत्तिः** — निवृत्ति (होती है) ।





*संगति — क्लेश-कर्मों की निवृत्ति से क्या होता है ?*

**तदा सर्वावरणमलापेतस्य ज्ञानस्यानन्त्याज्ज्ञेयमल्पम् ॥३१॥**

**तदा** — तब (कर्मों की निवृत्ति होने पर)
**सर्व** — सब
**आवरण** — आवरण (और)
**मल** — मल (से)
**अपेतस्य** — अलग हुए (चित्त) के
**ज्ञानस्य** — ज्ञान के
**आनन्त्यात्** — अनन्त होने से
**ज्ञेयम्** — जानने योग्य (वस्तु)
**अल्पम्** — थोड़ी (रह जाती है) ।

*संगति — तब पुनर्जन्म देने वाले गुणों के परिणाम का क्या होता है?*

**ततः कृतार्थानां परिणामक्रमसमाप्तिर्गुणानाम् ॥३२॥**

**ततः** — तब
**कृतार्थानाम्** — कृतार्थ अर्थात् अपने काम को पूरा कर चुके हुए
**गुणानाम्** — गुणों के
**परिणाम** — परिणाम (के)
**क्रम** — क्रम (की)
**समाप्तिः** — समाप्ति (हो जाती है) ।

*संगति — प्रसंगवश क्रम का स्वरूप बतलाते हैं ।*

**क्षणप्रतियोगी परिणामापरान्तनिर्ग्राह्यः क्रमः ॥३३॥**

**क्षण** — क्षणों

**प्रतियोगी** — सम्बन्धी (प्रतिक्षण होने वाली)
**परिणाम** — परिणाम (के)
**अपरान्त** — अन्त (में)
**निर्ग्राह्यः** — ग्रहण करने योग्य (गुणों की अवस्था-विशेष)
**क्रमः** — क्रम (कहलाती है) ।

*संगति — गुणों के परिणाम-क्रम की समाप्ति पर क्या होता है ?*

**पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति ॥३४॥**

**पुरुष** — पुरुष
**अर्थ** — अर्थ (से)
**शून्यानाम्** — शून्य हुए
**गुणानाम्** — गुणों का
**प्रतिप्रसवः** — अपने कारण में लीन हो जाना
**वा** — अथवा (अपने)
**स्वरूप** — स्वरूप (में)
**प्रतिष्ठा** — अवस्थित (हो जाना)
**चितिशक्तिः** — चितिशक्ति अर्थात् द्रष्टा (का)
**कैवल्यम्** — कैवल्य अर्थात् स्वरूपस्थिति है (और यह पाद तथा योगशास्त्र यहाँ)
**इति** — समाप्त (होता है) ।

-ॐ-